



2025

मन के दर्पण से



शब्द केवल ध्वनियाँ नहीं होते, वे भावनाओं के दीपक होते हैं, जो अंधकार में भी राह दिखाते हैं, और दिलों के बीच अनकहे रिश्ते जोड़ते हैं।

भाषा वह पुल है, जो मनुष्य को मनुष्य से जोड़ती है। यह हमारे विचारों, अनुभूतियों और सपनों की अभिव्यक्ति है। बिना भाषा के समाज की कल्पना अधूरी है। सभ्यता और संस्कृति का इतिहास अगर कहीं सुरक्षित है, तो वह साहित्य में है। साहित्य जीवन का आईना है, जो समय-समय पर बदलते मूल्यों, संघर्षों और संवेदनाओं को अपनी स्याही में उतारता रहा है। हर भाषा अपनी आत्मा में एक पूरी संस्कृति को संजोए होती है। किसी भी भाषा का महत्व केवल बोलने या लिखने तक सीमित नहीं, बल्कि वह हमारी पहचान, हमारी विरासत और हमारी सोच का आधार भी है। हिंदी, अपनी विशालता और आत्मीयता के कारण, न केवल करोड़ों लोगों की मातृभाषा है, बल्कि अनेक भाषाओं और बोलियों की धड़कन भी है। विद्यालय में बच्चों को भाषा और साहित्य से जोड़ना इसलिए आवश्यक है, क्योंकि यहाँ से उनके व्यक्तित्व का निर्माण होता है। भाषा उन्हें न केवल अपनी भावनाएँ व्यक्त करने का साहस देती है, बल्कि दूसरों की संवेदनाओं को समझने का सामर्थ्य भी प्रदान करती है। साहित्य पढ़ना बच्चों को कल्पनाशील, संवेदनशील और विचारशील बनाता है।

हम मानते हैं कि साहित्य केवल पढ़ने की चीज नहीं है, यह जीने की प्रक्रिया है। जब बच्चे कविता, कहानी या नाटक से जुड़ते हैं, तो वे जीवन की गहराइयों को महसूस करना सीखते हैं। यही अनुभव उन्हें आगे चलकर सज्जा इंसान बनाता है। आइए, हम सब मिलकर शब्दों की इस दुनिया का हिस्सा बनें और भाषा-साहित्य के इस अमूल्य खजाने को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाएँ। क्योंकि जब तक भाषा जीवित है, तब तक संस्कृति, संवेदना और मानवीय रिश्ते भी जीवित रहेंगे।



मासूम कल्पनाएँ

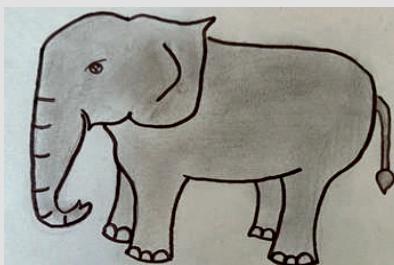


- मोहम्मद इब्राहीम

कक्षा 3 'D' विभाग

पेड हमारे साथी हैं

पेड हमारे साथी हैं,
छाया हमको देते हैं।
बादल से पानी लाते हैं,
मीठे-मीठे फल भी देते हैं।
हर पल अपना बचन निभाते,
जीवन को सुख-समृद्ध बनाते।
आओ मिलकर पेड लगाएँ,
धरती को हरा-भरा बनाएँ।



- विधात्रि. वार्दे

कक्षा 3 'D' विभाग

मेरी कविता - हाथी

हाथी आया, धीरे-धीरे चलते,
हाथी का है बड़ा दिल।
देखो उसके बड़े-बड़े कान,
सबको हँसाता खिलखिल।
खेल-खेल में चलता जाता,
खाता है वह केला।
जब सूँड उठाकर हिलाता,
सारा जंगल हँसता-खेला।
उसकी चाल है बहुत मस्त,
झूम-झूमकर चलता दुरुस्त।
कभी हँसते, कभी डोलते,
हाथी भाई गोल-मटोल,
बड़े ही प्यारे, बड़े ही भोले।



चिकी – बहादुर चिड़िया

चिकी एक छोटी चिड़िया थी। उसे गाना और उड़ना बहुत पसंद था। एक दिन बहुत तेज़ हवा चली। तूफ़ान आया। सारे जानवर डर के छुप गए। चिकी भी डर गई। वह पेड़ से चिपककर बैठ गई। उसने पेड़ में एक छोटा सा छेद देखा और उसमें छुप गई। तूफ़ान खत्म हुआ और सूरज निकल आया। चिकी फिर से गाने लगी। वह बहुत खुश और बहादुर थी।

- श्रेया कृष्णा

कक्षा 3 'B' विभाग

कहानी समीक्षा: 'ममता' – प्रेमचंद

प्रेमचंद की कहानी 'ममता' पढ़ना मेरे लिए एक बहुत ही गहरा और संवेदनशील अनुभव रहा। कहानी में नायिका का त्याग, करुणा और साहस प्रमुख रूप से प्रस्तुत हैं, जो पाठकों के मन में मानवीय मूल्यों की गहरी समझ विकसित करते हैं। पढ़ते समय मैं नायिका के साहस और ममता के भाव से बहुत प्रभावित हुई। मुझे यह महसूस हुआ कि ममता केवल अपने बच्चों तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह हर उस स्थिति में जागृत हो सकती है जहाँ किसी को सुरक्षा और प्रेम की आवश्यकता हो। कहानी ने मुझे करुणा और सहानुभूति के महत्व को याद दिलाया। यह अनुभव मेरे लिए यह भी याद दिलाने वाला रहा कि साहित्य केवल भाषा सीखने का साधन नहीं है, बल्कि यह जीवन मूल्यों और संवेदनशीलता को समझने का भी प्रभावी माध्यम है। कहानी ने करुणा और सहानुभूति के भाव को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया, जो पाठक के मन में स्थायी प्रभाव छोड़ता है। कुल मिलाकर, "ममता" ने मुझे गहराई से हुआ और जीवन में प्रेम और सहानुभूति के महत्व को समझने में मदद की।



- भाग्यलक्ष्मी. पी
हिंदी शिक्षिका

चंदा मामा

चंदा मामा गोल-मटोल,
कुछ तो बोलो, कुछ तो बोलो।
कल थे आधे, आज हो गोल,
खोल भी दो अब अपनी पोल।
रात होते ही तुम आ जाते हो,
संग अपने सितारे लाते हो।
लेकिन दिन में कहाँ छिप जाते?
कुछ तो बोलो, कुछ तो बोलो।



- ब्रियाना बोजाम्मा. बी. जे
कक्षा 4 'H' विभाग



मेरा भारत
मेरा भारत सबसे प्यारा,
रंग-बिरंगा न्यारा-न्यारा।
नदी, पहाड़ और हरे-भरे खेत,
सबको मिलते यहाँ प्रेम के गीत।
हर दिल में बसी है शान,
मेरा भारत मेरी जान।



- सैवीयो पॉल
कक्षा 4 'C' विभाग

चिड़िया रानी

चिड़िया रानी, चिड़िया रानी,
तुम हो पेड़ों की रानी।
सुबह सवेरे उठ जाती हो,
ना जाने क्या गाती हो।
क्या तुम भी पढ़ने को जाती हो,
या नौकरी करने को जाती हो?
शाम से पहले आती हो,
बच्चों के लिए दाना लाती हो।
भर-भर चोंच खिलाती दाना,
चूँ-चूँ चहक सुनाती गाना।



-सिरी जी. श्रेयश
कक्षा 4 'H' विभाग



प्रकृति



-रुथवा बालाजी
कक्षा 4 'H' विभाग

हरी-भरी वादियाँ और सुंदर हैं नजारे,
कल-कल बहते झरने मन को हैं प्यारे।
चहकते परिंदे, लहराती हवाएँ,
धरती की गोद में जीवन मुस्कुराएँ।
फूलों की खुशबू, नदियों की कल-कल,
हरियाली से महके दुनिया हर पल।
आओ मिलकर सुरक्षित बनाएँ,
प्रकृति के रंगों को और निखारों।

बारिश

रिमझिम-रिमझिम बारिश आई,
सबके लिए खुशियाँ लाई।
कोयल, मोर, दादुर गाते,
मीठे-मीठे गीत सुनाते।
चाय-पकौड़ी हम खूब हैं खाते,
सबके मन को यह हैं भाते।
बारिश में हम सब नाचे-गाएँ,
आओ मिलकर मौज-मस्ती मनाएँ।
रिमझिम-रिमझिम बारिश आई,
सबके लिए खुशियाँ लाई।



-कविका टी.टी
कक्षा 4 'A' विभाग



हिंदी है मेरी पहचान

अपनी भाषा, अपनी बोली,
हिंदी है मेरी पहचान।
14 सितंबर को इसे मिला
राजभाषा का सम्मान।
कविताओं में बसती है,
गीतों में बहती है।
प्रेम की भाषा है यह,
हर दिल में रहती है।
सरल है इसका व्याकरण,
साहित्य इसका है भूषण।
भारत की संस्कृति का
यह है अनुपम दर्पण।
मिलकर इसका मान बढ़ाएँ,
हर दिन इसे अपनाएँ।
नए युग में भी हिंदी का
चमकेगा ऊँचा नाम।
हिंदी है भारत का मान,
हिंदी से ही है हमारी शान।



हिंदी दिवस

हिंदी दिवस 14 सितंबर को मनाया जाता है। हिंदी भारत की राजभाषा है। 14 सितंबर 1949 को हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा मिला था। हिंदी भाषा हमारे देश की आन, बान और शान है। यह दिवस लोगों को हिंदी भाषा के प्रति जागरूक करने के लिए मनाया जाता है। हिंदी भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। यह भाषा बहुत सरल, सुगम और सहज है। हिंदी भाषा भारत देश का गौरव तथा एकता का प्रतीक है। यह हमारे देश की संस्कृति और संस्कारों का प्रतिबिंब है।

इसलिए हमें हिंदी भाषा का आदर और सम्मान करना चाहिए।

-पियूष गौड़ा एम
कक्षा 5'G' विभाग



मुस्कान

छोटी-सी मुस्कान है, पर काम बड़ा कर जाती।
दिलों के बंधन जोड़ के, दूरी को मिटा जाती॥
ना धन चाहिए, ना ताज चाहिए,
बस एक सज्जी बात चाहिए।
अगर होठों पे रहे सदा,
तो डर राह आसान बन जाती।



-नक्षा के
कक्षा '5H' विभाग

हिंदी दिवस

हिंदी है हमारी शान,
हर दिल में इसका मान।
भाषा नहीं सिर्फ एक भावना,
जो जोड़ती सबको समान।
हज़ारों रंगों की छाया,
हिंदी में है अपनी माया।
आओ मिलकर करें उल्लास,
हिंदी दिवस का आज विशेष उत्सव।



-सुनिधि आर. जाजूर
कक्षा '5C' विभाग



पुस्तकालय

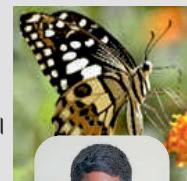
पुस्तकालय है मेरा नाम,
ज्ञान बॉटना मेरा काम।
जो भी तुम पढ़ना चाहो,
मेरे पास आ जाओ।
दिव्य दृष्टि तुम पाओगे,
सफल सदा कहलाओगे।
ग्रंथ, काव्य और परीकथाएँ,
महापुरुषों की अमर गाथाएँ।
विद्या, ज्ञान या हो कंप्यूटर,
मैं सब विषयों का हूँ मास्टर।
ध्यान लगाकर तुम सब पढ़ना,
सदा ही आगे-आगे बढ़ना।



-हिनल काटेड
कक्षा '5B' विभाग

तितली का संदेश

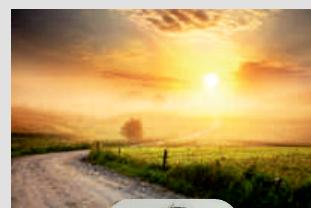
रंग-बिरंगी तितली उड़ती, बाज़ में जाती।
मेहनत और धैर्य से, कोकून से बाहर आती।।
फूलों से कहती- जीवन में रंग भरना,
संघर्ष के बाद ही सपनों को सँवारना।
हर कठिनाई में हिम्मत ना हरना,
मेहनत से ही ऊँचाइयों को पाना।
तितली हमें सिखाती है यह प्यारी सीख-
धैर्य और साहस से मिलती है सही जीता।।



-नकुल जी गोल्ला
कक्षा '5G' विभाग

नई सुबह, नया सफर

सूरज की पहली किरण,
लाती है उम्मीद का पैग़ाम।
हर दिन है एक नया अवसर,
सपनों को देने उड़ान तमाम।
छोटे-छोटे कदम भी,
बड़े बदलाव ला सकते हैं।
अगर दिल में हो सच्ची चाहत,
तो रास्ते खुद बन सकते हैं।
आओ मिलकर संकल्प लें,
मुस्कान से हर दिल भर दें।
प्यार से दुनिया को सुंदर कर दें।



-विया जैन
कक्षा '5C' विभाग

माँ का प्यार

जब भी आँसू आते हैं,
आँचल में ल्हुपा लेती है।
भूख लगे तो अपनी थाली भी दे जाती है।
रात भर जागकर कहानी सुनाती है।
जब भी बीमार पड़ँ,
माथे पर हाथ रखती है।
गिरने पर वही उठाती है।
उसकी ममता का कोई मोल नहीं।
ईश्वर का रूप है माँ, यह झूठ नहीं।
उसकी गोद में जन्मत है।
माँ के बिना जीवन अधूरा है।
माँ का प्यार सद्वा है।
माँ ही मेरी दुनिया है।



-अविनाश जैन

हिंदी शिक्षक

नहीं कलम, नए विचार

हिंदी दिवस: गर्व और सम्मान का दिन



- मोहम्मद ज़ोहेब

कक्षा 6'D' विभाग

14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है क्योंकि इसी दिन 1949 में संविधान सभा ने हिंदी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। हिंदी भारत की एक प्राचीन और समृद्ध भाषा है, जो न केवल एक भाषा है, बल्कि हमारी संस्कृति और सभ्यता का भी प्रतीक है। हिंदी भाषा न केवल भारत में, बल्कि विदेशों में भी बोली जाती है और इसका उपयोग निरंतर बढ़ता जा रहा है। आइए, हम सब मिलकर हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना योग्य योगदान दें और इसे पूरे विश्व में एक सम्मानित स्थान दिलाएँ।



14 सितंबर - हिंदी दिवस

हमारा देश भारत अनेक भाषाओं का देश है, लेकिन हिंदी हमारी राजभाषा है। हर वर्ष 14 सितम्बर को हम हिंदी दिवस मनाते हैं, क्योंकि 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को भारत की राजभाषा घोषित किया था। हिंदी केवल एक भाषा नहीं है, यह हमारी पहचान और संस्कृति का प्रतीक है। यह हमें उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक जोड़ती है। हमें हिंदी बोलने, लिखने और पढ़ने पर गर्व होना चाहिए। आइए, हम सभी संकल्प लें कि हम हिंदी का सम्मान करेंगे और इसे अपने जीवन में अपनाएँगे।



-काव्यी जैन

कक्षा 6'D' विभाग

हिंदी दिवस

हर साल 14 सितम्बर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। इसी दिन भारत की संविधान सभा ने देवनागरी लिपि में लिखी गई हिंदी भाषा को भारत गणराज्य की राजभाषा घोषित किया था। यह दिन हर वर्ष हिंदी के महत्व पर ज़ोर देने के लिए मनाया जाता है, विशेष रूप से आज की पीढ़ी के बीच, जो अंग्रेज़ी से प्रभावित होती जा रही है। हिंदी दिवस का आयोजन स्कूलों और कॉलेजों में जाता है, जहाँ प्रबंध समिति द्वारा हिंदी वाद-विवाद, कविता-पाठ, कहानी-वाचन जैसी विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।

- आध्या कावेरम्मा के. एस

कक्षा 6'D' विभाग



हिंदी दिवस

हिंदी है जन-जन की आशा,
हिंदी है भारत की भाषा।
सुनो, समझो बात हमारी,
हिंदी सबसे प्यारी हमारी।
हिंदी से ही है हिंदुस्तान की पहचान,
यही है अपने देश की शान।
मन की भाषा, प्रेम की आवाज़,
हिंदी में बसते हैं दिलों के राज़।
शर्म नहीं, यह है अभिमान -
हिंदी है मेरी मातृभूमि की जान।
भारत माँ के भाल की स्वर्णिम हिंदी हूँ,
सांस्कृतिक गौरव की सजीव हिंदी हूँ।
मैं हूँ भारत की बेटी, जन-जन की प्यारी,
आपकी अपनी — हिंदी, सबसे न्यारी।



- हिया सालेचा

कक्षा 6'D' विभाग



हिंदी: दिल से जुड़ी एक मिठास

हिंदी दिवस मेरे लिए सिर्फ़ एक तारीख़ नहीं, बल्कि एक याद दिलाने वाला दिन है कि हम कितनी समृद्ध और सुंदर भाषा के बारिस हैं। जब भी मैं हिंदी में किताब पढ़ती हूँ या कविता लिखती हूँ, तो लगता है जैसे शब्द दिल से निकलकर कागज़ पर उतर रहे हों। मुझे लगता है कि हिंदी में वह गहराई है, जो किसी और भाषा में महसूस नहीं होती। यह सिर्फ़ संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि सोचने और समझने का एक तरीका है।

आज के समय में अंग्रेज़ी का चलन बहुत बढ़ गया है, लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हिंदी हमारी राजभाषा है। स्कूल, कॉलेज, ॲफिस और सोशल मीडिया में हिंदी को कमतर समझा

जाता है, जो मुझे बहुत खलता है। मैं मानती हूँ कि हर भाषा का सम्मान ज़रूरी है, लेकिन अपनी भाषा को नज़रअंदाज़ करना ठीक नहीं। हिंदी में अपार साहित्य, इतिहास और भावनाएँ छिपी हुई हैं, जिन्हें समझने और अपनाने की ज़रूरत है।

हिंदी दिवस पर मैं खुद से यह वादा करती हूँ कि मैं हिंदी का सम्मान हमेशा बनाए रखूँगी। चाहे सोशल मीडिया हो या दिनचर्या की बातचीत, मैं हिंदी को प्राथमिकता दूँगी। हमें यह समझना होगा कि भाषाएँ जोड़ती हैं, बाँटती नहीं - और हिंदी तो हमारी आत्मा की आवाज़ है। जब तक हम अपनी भाषा से प्यार नहीं करेंगे, तब तक हमारी पहचान अधूरी रहेगी।

- अंजली जे. एस.

हिंदी शिक्षिका



फूलों की दुनिया

सूरज की किरणों में सूर्यमुखी खिलते,
चाँदनी में जुगनू आँखों में खेलते।
भिन्न-भिन्न रंगों के फूल,
भिन्न-भिन्न खुशबू, अमूल्य दिल।
दिखते वे सब कितने सुंदर,
गिफ्ट दूँ यूँ ही अध्यापिका को मुखरा।
जंगलों में खिलते ये, पहाड़ों में भी,
नदियों के पास, दरनों की झरझर में भी।
बारिश की बूँदें जब फूलों पर गिरती हैं,
तो लगती हैं हीरे-पत्तों में छुपी मीत।
जब मैं झूला झूलती, होती फूलों की बारिश,
सोचती ये नज़ारा कहाँ से आता-
ऊपर देखती, पेड़ मुस्कुराते।



- माही जैन
कक्षा '6A' विभाग

भारत माँ

भारत माता, हमारी प्यारी भारत माता,
सभी को प्रिय बनकर हमारे दिलों में वास करो,
हमारी प्यारी भारत माता।
प्यार और दया से परिपूर्ण हो तुम,
हमें आनंदित करो।
हम जहाँ कहीं भी चलें, वहाँ भी रहो,
हमारी प्यारी भारत माता।



- स्वरा एस
कक्षा '6A' विभाग

भ्रष्टाचार

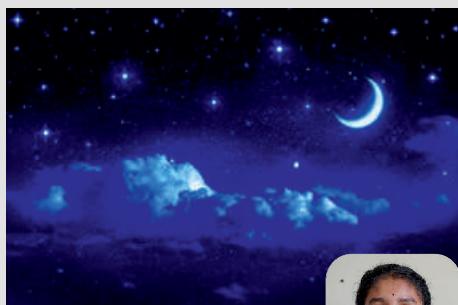
जब से यह दुनिया में आया भ्रष्टाचार,
तब से लोग कर रहे हैं खूब दुर्व्यवहार।
इसकी छाया बन गई है सर्वव्यापी,
पर यह परमात्मा के प्रति है नापसंदी।
यदि नेता हैं भ्रष्ट, तो लोग भी दुराचारी,
हे भगवान! पार करो नैया हमारी।
लोगो! भ्रष्टाचार को मारो ऐसे गोले,
कि हर बच्चा ज़ोर से बोले—
“एक-दो, एक-दो,
भ्रष्टाचार को फेंक दो।”



- निशिता सिंह
कक्षा '6B' विभाग

मेरा नाम कृतिका

चाँदनी रात में चमकता तारा,
सौंदर्य की मूरत, सबके दिलों में बसा।
नाम है मेरा - कृतिका, उजली आभा का सारा।
फूलों की तरह खिलूँ, बागों को महकाऊँ,
खुशियाँ बिखेरूँ जहाँ।
ज्ञान की देवी सरस्वती जैसी,
बुद्धि और कला से परिपूर्ण।
हर दिशा में रोशनी फैलाऊँ।
नाम है मेरा - कृतिका,
सदा गौरवमयी।



- कृतिका दास
कक्षा '6B' विभाग



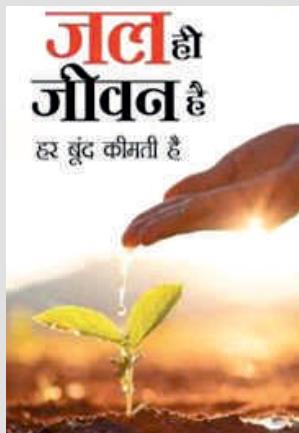
पर्यावरण

हरियाली है जीवन की जान,
जल ही जीवन का सर्वोच्च मान।
प्रकृति का करें हम सब रक्षण,
बनाएँ इसे हरियाली से सशक्त और सुगम।
पेड़ लगाएँ, जल को बचाएँ,
धरती को स्वस्थ बनाएँ।
प्रदूषण से रहें हम सब दूर,
फिर से सजाएँ हरियाली हर ओर।



- झेंकारा टि केदार
कक्षा '7E' विभाग

जल ही जीवन



जल हमारे जीवन का एक अनमोल उपहार है। यह न केवल पीने के लिए आवश्यक है, बल्कि खेती, उद्योग, सफाई और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इसका उपयोग होता है। पृथ्वी पर जल की मात्रा बहुत अधिक है, लेकिन पीने योग्य मीठा जल मात्र 1% से भी कम है। आजकल हम देखते हैं कि जल की बर्बादी तेजी से हो रही है। कई स्थानों पर पानी की भारी कमी भी हो चुकी है। यदि हम नहाते समय बाल्टी का प्रयोग करें, नलों की टोटी बंद रखें, वर्षा जल संग्रहण करें और जल का पुनः उपयोग करें, तो जल संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। हमें यह समझना चाहिए कि यदि आज हम जल बचाने के उपाय नहीं अपनाएँगे, तो आने वाली पीढ़ियों को इसका गहरा खामियाज्ञा 'भुगतना' पड़ेगा। आइए, हम प्रत्येक दिन इस विचार को अपनाएँ - "हर बूँद की बचत, राष्ट्र की नींव।" अगर हम आज जल संरक्षण की आदत शुरू करें, तो हम एक जल-संपन्न, संतुलित एवं सुरक्षित भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।

- तरुण बी.एस

कक्षा '7E' विभाग



पप्पू तोता बोल पड़ा

पिंजरे में बैठा पप्पू तोता,
सीख गया था बोलना थोड़ा-थोड़ा।

एक दिन चिल्लाया ज़ोर से -
“दादी की चाय जल गई किर से।”

दादी बोली: “अरे, शर्म करो!”

तोता बोला: “पहले आप तो करो।”

मम्मी आई दूध लेके,

तोता बोला: “काम है, पहले यह देखो।”

पापा आए ऑफिस से थके,

तोता चिल्लाया: “काम चोर है सबके सब।”

पापा बोले: “अब तो ये बिलकुल बिगड़ गया है।”

दादी बोली: “इसका वाई-फाई बंद करूँ दूँ?”

अब पप्पू बैठा है चुपचाप,

बस सुनता है सबकी बातें।

पर मन में सोच रहा है दिन-रात

“कब मिलेगा मुझे मोबाइल हाथ?”



- सिरि एस चंद्रा

कक्षा '7A' विभाग



संस्कार



खुद को बेहतर बनाते हैं, बल्कि समाज में भी सकारात्मक बदलाव लाते हैं।

सम्मान का अर्थ है हर व्यक्ति की भावनाओं और विचारों का आदर करना। यह हमें सभ्य और समझदार बनाता है। ईमानदारी से हम सच्चाई का पालन करते हैं, जो हमारे रिश्तों में विश्वास और मजबूती लाती है। साहस हमें कठिन परिस्थितियों में सही निर्णय लेने की शक्ति देता है। सहानुभूति से हम दूसरों के दुःख और सुख को समझते हैं, जिससे हम एक दयालु इंसान बनते हैं। जिम्मेदारी का मतलब है अपने कार्यों और निर्णयों के परिणामों को स्वीकार करना और उन्हें सुधारने की कोशिश करना। यह हमें आत्मनिर्भर और विश्वसनीय बनाता है। इसलिए अपने फैसलों की पहचान करना और गलतियों से सीखना ज़रूरी है। इन मूल्यों को जीवन में अपनाने से न केवल हमारा आत्म-सम्मान बढ़ता है, बल्कि हम दूसरों के लिए प्रेरणा भी बनते हैं। इससे समाज में विश्वास, सौहार्द और सकारात्मक परिवर्तन संभव हो पाता है। इन मूल्यों को अपनाकर हम न केवल अच्छे विद्यार्थी बनते हैं, बल्कि अच्छे इंसान भी बनते हैं। इसलिए, इन मूल्यों को अपने जीवन में अपनाएँ और एक बेहतर भविष्य की ओर कदम बढ़ाएँ।

संस्कार हमारे जीवन में ऐसे मूल्य होते हैं, जो हमें एक अच्छा इंसान बनाने में मदद करते हैं। इनमें सम्मान, ईमानदारी, साहस, सहानुभूति और जिम्मेदारी शामिल हैं। जब हम दूसरों का आदर करते हैं, सच्चाई बोलते हैं, मुश्किलों का सामना करते हैं, दूसरों की भावनाओं को समझते हैं और अपने कार्यों की जिम्मेदारी लेते हैं, तब हम न केवल

कहानी समीक्षा – मेहनत का फल

अनुराग एक सुशील विद्यार्थी था। वह पढ़ाई में अच्छा नहीं था। उसे सभी मंदबुद्धि कहते थे। ध्यान न लगा पाने के कारण वह कक्षा में हमेशा पिछड़ जाता था। इस कारण उसके माता-पिता चिंतित रहते थे। उन्हें अनुराग से बहुत अपेक्षाएँ थीं। वह शिक्षक की बातें नहीं सुनता था। कक्षा में जो भी पढ़ाया जाता, उसे याद नहीं रहता था। इस कारण वह अपनी कक्षा में फेल हो गया। निराश होकर वह गाँव से बाहर जंगल की ओर चल पड़ा। चलते-चलते वह थक गया और उसे बहुत प्यास लगी। पास में ही उसने एक कुआँ देखा। कुछ द्वियाँ उस कुएँ से पानी भर रही थीं। उसने एक स्त्री से पानी पिलाने का अनुरोध किया। पानी पीते समय अनुराग का ध्यान कुएँ के पत्थरों पर बने गहरे निशानों पर गया। जब उसने एक स्त्री से इसका कारण पूछा तो उसने बताया कि रस्सी से पानी निकालते समय ये

- बविता के.जे
हिंदी शिक्षिका



निशान पड़ गए। तब अनुराग ने सोचा कि यदि एक रस्सी पत्थर पर निशान बना सकती है तो बार-बार पढ़ने से वह भी असफल नहीं होगा। हमें याद रखना चाहिए कि असफलता सफलता की कुंजी होती है।

सीखः इस कहानी से मुझे यह सीख मिलती है कि हमें कभी भी हार नहीं माननी चाहिए। हमें बार-बार अभ्यास करते रहना चाहिए क्योंकि लगन और मेहनत से असंभव काम भी संभव हो जाता है।

- आद्या धीरज

कक्षा 7 'D' विभाग

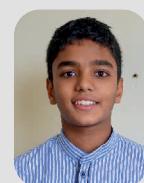


मेहनत का फल मीठा होता है

मेहनत एक ऐसी चीज़ है जो मेहनती व्यक्ति को कामयाबी तक ले जाती है। जीवन में सफलता और संतुष्टि प्राप्त करने का यह एक महत्वपूर्ण साधन है। मेहनत व्यक्ति को अपनी सफलता तक पहुँचाती है। हर व्यक्ति में मेहनत करने की ललक होती चाहिए। "मेहनत ज़िंदगी का एक बहुत बड़ा अंश है।" यदि कोई सच्चे मन से सही दिशा में परिश्रम करता है तो उसे सफलता अवश्य मिलती है। इतिहास गवाह है कि जो लोग कठिन परिश्रम करते हैं, वहीं जीवन में आगे बढ़ते हैं और अपने सपनों को पूरा करते हैं।

- सविश पूण्ड्रा

कक्षा 7 'B' विभाग



अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस हर साल 21 जून को मनाया जाता है। इसकी शुरुआत हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने की थी। इस योग का उद्देश्य मानसिक स्वास्थ्य, मन, शरीर और आत्मा की शारीरिक फिटनेस प्रदान करना है। यह हमारे शरीर को तरोताजा भी करता है और हमें शांत भी रखता है। योग केवल व्यायाम नहीं, बल्कि आत्मा को जानने और जीवन को सुलझाने का माध्यम है।

- दिव्यांश एस ए

कक्षा 7 'A' विभाग



योग

योग एक विशिष्ट कला है जिसमें हमारा शरीर और मन दोनों का भला होता है। योग करने से हमारे शरीर का बजन भी कम होता है। योग में बहुत प्रकार के आसन होते हैं, जैसे: ताङ्गासन, त्रिकोणासन, वीरभद्रासन, पद्मासन, वृक्षासन आदि। इन आसनों को करने से हमारे शरीर में ताकत और संतुलन बना रहता है। प्राणायाम भी योग का एक प्रकार है, जिससे हम अपने मन को संतुलित कर सकते हैं। हर साल 21 जून को विश्व योग दिवस मनाया जाता है।



- अनन्या एस

कक्षा 7 'A' विभाग



समय का महत्व



समय जीवन में बहुत महत्वपूर्ण होता है। यह हमें सही रास्ते पर ले जाता है। मैं समय का पालन करता हूँ। सुबह समय पर उठकर अपने सभी काम करता हूँ। मैं विद्यालय के सभी काम समय पर पूरा करता हूँ। समय मनुष्य के जीवन में अत्यंत मूल्यवान होता है। हमें हमेशा समय का सदृप्योग करना चाहिए और उसका अनुसरण करना चाहिए। समय के महत्व को समझकर हम अपने जीवन के उद्देश्य तक अवश्य पहुँच सकते हैं। समय का सही तरह से उपयोग करने से हमें कभी भी अपने लक्ष्य की प्राप्ति की चिंता नहीं होगी और हमारा मन शांत रहेगा। क्योंकि – “समय पर काम करो और शांत रहो।”

- हेमन गौड़ा

कक्षा 7 'B' विभाग



कठपुतली कविता का सारांश

कठपुतली कविता भवानीप्रसाद मिश्र जी द्वारा रचित है। इस कविता में कठपुतलियों को इंसानों जैसा दिखाया गया है और उनके फैसलों के बारे में बताया गया है। कवि ने कठपुतलियों को ऐसा जीव बताया है जो बहुत समय से धागों में बँधी हुई हैं। इसलिए कठपुतलियाँ बहुत गुस्से में हैं और आज़ादी की माँग कर रही हैं।

वे अपने दिल की आवाज़ सुनना चाहती हैं। इसी समय एक कठपुतली यह सोचकर परेशान है कि उसने यह फैसला क्यों लिया। आखिर में कवि ने इस कविता के ज़रिए यह समझाने की कोशिश की है कि हमारे समाज में औरतें भी जिम्मेदारियों और कर्तव्यों के धागों से बँधी होती हैं और वे भी आज़ादी चाहती हैं।

समाज की औरतें भी अपने मन की इच्छाओं को लेकर हिचकिचाती हैं और खुद से सवाल करती हैं। इस कविता से मुझे कठपुतलियों के बारे में बहुत कुछ सीखने को मिला। अगर कठपुतलियाँ मनुष्य की तरह जीवन जी रही होतीं तो उनका जीवन भी ऐसा ही होता। उनका जीवन कठिनाइयों से भरा होता। उनका जीवन पहले जमाने की औरतों के जीवन से मिलता-जुलता होता। इस कविता के माध्यम से कठपुतलियों के जीवन की कठिनाइयों और वास्तविकता का पता चलता है।

- सिद्धार्थ जी

कक्षा 7 'B' विभाग



हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है।

- सुमित्रानन्दन पंत

बारिश का मौसम

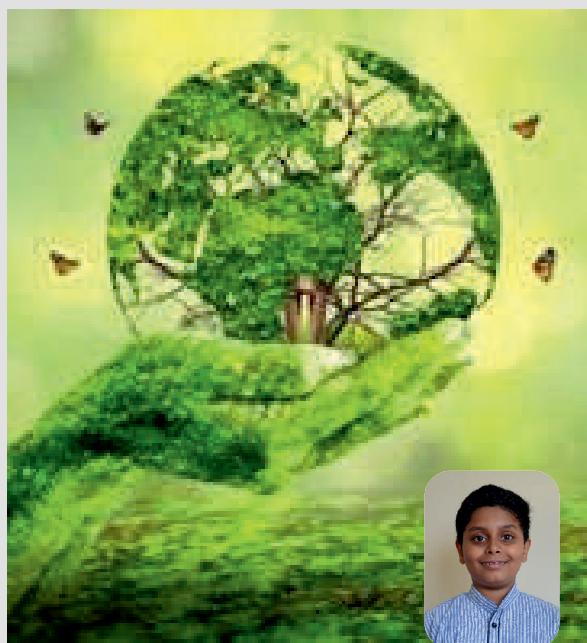
जब बारिश का मौसम आता है,
हमारे चेहरे पर मुस्कान लेकर आता है।
खिड़की के पास बैठना,
दादी के हाथ के पकोड़े खाना,
यारों और दोस्तों के साथ
बारिश में भीगना
और कीचड़ में कूदना –
उसका मज़ा ही कुछ और होता है।
बारिश में भीगने के बाद,
घर आकर मम्मी के पास जाना
और बहुत सारी डॉट खाना।



- लिशा डी
कक्षा 7 'C' विभाग



उसके बाद दोस्तों और भाई-बहन के साथ नहाना,
और साथ में पानी में खेलकर फिर से डॉट खाना।
यह है मेरी बचपन की
एक मीठी और प्यारी याद।



- विष्णु प्रशांत
कक्षा 7 'C' विभाग

परिसर की आवाज़

परिसर बुलाता है,
बोलता है – “बचाओ!”
पर हमारे कान कमज़ोर हैं
सुनने के लिए
परिसर की आवाज़।

हम सब बहरे हैं,
सुन नहीं सकते
परिसर की चीख,
“मुझे बचाओ,
तुम भी बचो,” – बोलती
परिसर की आवाज़।

वह बोलती है –
“कितनी सुंदर थी मैं,
पर तुम लोग देखते नहीं,
सिर्फ मुझे बरबाद करते हो...”
परिसर की आवाज़।

चलो हम सब सुनते हैं
परिसर की आवाज़।
चलो, बचाते हैं सुंदर परिसर को,
चलो सुनते हैं –
परिसर की आवाज़।

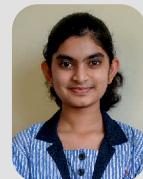
मेरा पसंदीदा त्योहार - वरमहालक्ष्मी



मेरा पसंदीदा त्योहार वरमहालक्ष्मी है। इस शुभ दिन पर हमारा घर रंग-बिरंगा दिखता है। मुझे यह त्योहार इसलिए पसंद है क्योंकि मेरा पूरा परिवार इसे मनाने के लिए एकत्रित होता है, और यह त्योहार हमारे घर में अन्य त्योहारों की अपेक्षा बहुत अधिक शानदार तरीके से मनाया जाता है। मुझे अपनी माँ के साथ रंग-बिरंगे कपड़ों (साड़ी) और अन्य अलंकारिक वस्तुओं से देवी लक्ष्मी के सुंदर स्वरूप की स्थापना करने में मदद करना पसंद है। इस दिन कई तरह की मिठाइयाँ भी बनाई जाती हैं, जिन्हें हम बाद में खा सकते हैं। साथ ही प्रसाद के रूप में कई तरह के फल भी रखे जाते हैं। इस दिन, मैं अपने दोस्तों से भी मिलती हूँ, उन्हें अपने घर बुलाती हूँ और उनके घर भी जाती हूँ। मुझे अपनी दादी माँ के हाथों से बनाए गए पारंपरिक भोजन बहुत पसंद हैं। हम नए कपड़े पहनते हैं, घर को रोशनी और फूलों से सजाते हैं। यह सब करने के बाद हम साथ मिलकर देवी की प्रार्थना करते हैं। इसलिए मुझे यह त्योहार बहुत पसंद है।

- अन्वीक्षा नायक

कक्षा 8 'F' विभाग



वरमहालक्ष्मी त्योहार

इस त्योहार में लोग माँ लक्ष्मी की पूजा करते हैं। माँ लक्ष्मी की मूर्ति को गहनों और फूलों से सजाया जाता है। वरमहालक्ष्मी त्योहार हर वर्ष अगस्त महीने में, दूसरे शुक्रवार या पूर्णिमा से पहले आने वाले शुक्रवार को मनाया जाता है। इस दिन नकद पैसे, गहने और कमल के फूलों को माँ लक्ष्मी मानकर पूजा की जाती है। हमारे देश में औरतों को माँ लक्ष्मी का स्वरूप माना जाता है, इसलिए सभी औरतों को घर में बुलाकर हल्दी, कुमकुम और शगुन दिया जाता है। लोग लक्ष्मी माँ के स्वागत के लिए अपने घर के दरवाजे को आम के पत्तों और फूलों से सजाकर सुंदर रंगोली बनाते हैं। कई लोग माँ के स्वागत के लिए भजन भी गाते हैं। इस त्योहार में हम अपने परिवार की सुख, शांति, स्वास्थ्य और शुभ-लाभ के लिए प्रार्थना करते हैं। इस दिन हम नए कपड़े पहनते हैं, घर में तरह-तरह के पकवान बनाते हैं और परिवार के सभी लोग खुशी से माँ लक्ष्मी का स्वागत करते हैं। हम सबका मानना है कि माँ लक्ष्मी का आशीर्वाद हम सब पर है और हमेशा बना रहे।



- इशांका संतोष

कक्षा 8 'G' विभाग



प्रयत्न

परिश्रम और लगन से हर काम पूरा होता है, आलस्य और सुस्ती से मनुष्य न सफल होता है। कभी-कभी प्रयत्न से हार भी मिलती है, पर फिर से प्रयत्न करना हमें साहस देता है। प्रयत्न करने से हमें जीत भी मिलती है। पर यदि जीतकर हम प्रयत्न करना छोड़ दें, तो अंत में हमें हार ही मिलती है।



- लतेश हेच एस
कक्षा 8 'G' विभाग



भाषा: भावों की अभिव्यक्ति और शिक्षा का माध्यम



भाषा केवल शब्दों का मेल नहीं है, बल्कि अपने भावों को व्यक्त करना का सबसे महत्वपूर्ण साधन है। किसी भी भाषा का प्रयोग कर हम अपने मन की बात दूसरों तक पहुँचाने में सफल होते हैं। भाषा केवल बोलकर ही नहीं, बल्कि लिखकर, संकेतों द्वारा और हाव-भावों के माध्यम से भी अभिव्यक्त की जा सकती है। जब बच्चा छोटा होता है, तब उसे शब्दों का ज्ञान नहीं होता, फिर भी वह अपनी भावनाएँ मुस्कान, रोने और इशारों से प्रकट कर देता है। यही कारण है कि कहा जाता है- भाषा दिल से निकलकर दिल तक पहुँचती है।

मनुष्य को सभ्य व पूर्ण बनाने के लिए शिक्षा जरूरी है और सभी प्रकार की शिक्षा का माध्यम भाषा ही है। जीवन के सभी क्षेत्र में, चाहें किताबी शिक्षा हो या अनुभवों से मिलने वाली व्यावहारिक शिक्षा, दोनों ही भाषा के माध्यम से ही संभव होती है। इस प्रकार, भाषा न केवल संवाद का साधन है, बल्कि ज्ञान और संस्कृति का वाहक भी है।

भाषा का प्रयोग करते समय हमें कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए। हमारी भाषा में हमेशा सकारात्मकता ज्ञलकनी चाहिए और ऐसे शब्दों से बचना चाहिए जो किसी को आहत करें। बातचीत करते समय प्रेम और सम्मान का भाव रखना चाहिए। शब्दों का सही चयन और शुद्ध उच्चारण हमारी बात को अधिक प्रभावी बनाते हैं। भाषा कौशल के विकास से रचनात्मकता, आत्मविश्वास और सामाजिक प्रगति में वृद्धि होती है। वह न केवल हमें स्वतंत्र बनाती है, बल्कि दूसरों के साथ अच्छे संबंध स्थापित करने में भी सहायक होती है।

कोई भी भाषा छोटी व बड़ी, अच्छी व बुरी नहीं होती सभी भाषा का अपना महत्व, इतिहास और सौंदर्य होता है। हमें सभी भाषाओं का समान रूप से सम्मान करना चाहिए, क्योंकि हर भाषा मानव सभ्यता की धरोहर है।

जितनी अधिक भाषाएँ हम सीखते हैं, उतना ही हमारा दायरा विस्तृत होता है। बहुभाषी होने से न केवल हमारा मस्तिष्क अधिक सक्रिय और तेज़ होता है, बल्कि यह हमारी सोचने समझने की क्षमता को भी गहराई देता है। आज की वैश्वीकरण की दुनिया में बहुभाषी होना रोजगार, शिक्षा और अंतरराष्ट्रीय संवर्धनों के अनगिनत अवसरों के द्वारा खोलता है। भाषा हमें केवल हमारी जड़ों से ही नहीं जोड़ती, बल्कि यह हमें पूरी दुनिया से जोड़ने का सेतु भी बन जाती है।

अंततः भाषा ही वह सेतु है जो मन को मन से, और दिल को दिल से जोड़ती है। यह केवल संवाद का साधन नहीं, बल्कि विचारों के आदान-प्रदान, भावनाओं की अभिव्यक्ति और संस्कृति के संरक्षण का सबसे प्रभावशाली माध्यम है। वास्तव में, भाषा वह अमूल्य उपहार है जो मनुष्य को मानव बनाती है और उसे समाज से जोड़ती है।



हिन्दी हमारे देश और भाषा की प्रभावशाली विरासत है।

- मायिनलाल चतुर्वेदी



- सुमन भट्ट
हिन्दी शिक्षिका

बदलू काका के नाम पत्र

प्रिय बदलू काका,
सादर प्रणाम।



काका, मैं आशा करती हूँ कि आप स्वस्थ और खुश हैं। मैं यह पत्र इसलिए लिख रही हूँ, क्योंकि मैं चाहती हूँ कि आप जानें—आपकी कला बहुत खास है और आपकी मेहनत सबको पसंद है। काका, आपकी लाख की चूड़ियाँ बहुत सुंदर और अनोखी होती हैं। ये सिर्फ चूड़ियाँ नहीं, बल्कि आपकी मेहनत और हमारे गाँव की परंपरा का प्रतीक हैं। मुझे विश्वास है कि आपकी यह कला सिर्फ गाँव तक ही नहीं, बल्कि शहर और दूर-दराज़ के लोग भी पसंद करेंगे।

आजकल सोशियल मीडिया और ऑनलाइन स्टोर की मदद से आपकी चूड़ियाँ आसानी से सबके घर तक पहुँच सकती हैं। अगर आप नई और सुंदर डिज़ाइन बनाएँ, तो लोग उन्हें और भी पसंद करेंगे। काका, कभी हिम्मत मत हारिए। आपकी मेहनत और कला में बहुत ताकत है। मैं जानती हूँ कि आप फिर से अपने व्यापार को बढ़ा सकते हैं और अपनी चूड़ियों को सबके दिलों में लोकप्रिय बना सकते हैं।

आपकी स्नेही मित्र,

भारत ने चैंपियंस ट्रॉफी जीती

भारत की क्रिकेट टीम हमेशा अच्छा प्रदर्शन करती है। वह विश्व की प्रसिद्ध टीमों में से एक है। लेकिन जब भारत ऐ. सी. सी. कप जीतता है तो उसकी खुशी ही कुछ और होती है। भारत ने चैंपियंस ट्रॉफी 2025 धूमधाम से जीती। भारत ने न्यूज़ीलैंड को चार विकेट से हराया। न्यूज़ीलैंड ने पहले बल्लेबाज़ी की और 281 रन बनाए। भारत ने छह विकेट खोकर जीत हासिल की। भारत के लिए रोहित शर्मा और सूर्यकुमार यादव ने शानदार खेल दिखाया। कसान रोहित शर्मा की खुशी देखकर मुझे भी बहुत प्रसन्नता हुई। पूरे देश में हर्ष और उल्लास का वातावरण बन गया। मैंने सोचा कि अगले दिन छुट्टी होगी, लेकिन छुट्टी नहीं मिली।

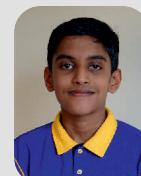
- सान्ती हुयिलगोल

कक्षा 8 'C' विभाग



- माधव जयकृष्णन

कक्षा 8 'D' विभाग



हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है।

- मैथिलीशरण गुप्त

जल – जीवन

बूँद-बूँद में अमृत बसता,
बूँद-बूँद में शक्ति है।
पानी कहते हैं इसे,
सृष्टि पर जीवन का आधार है।

बनाया नहीं जा सकता इसे,
पर बचाया जा सकता है।
अनमोल है पानी बहुत,
व्यर्थ नहीं किया जा सकता है।

सफाई हो या फसल उगाना,
स्नान हो या पौधों को सींचना।
अपनी आवश्यकता को जानो,
सही व्यवहार पर नियंत्रण रखो।

वर्षा जल संचयन सीखो,
भूतल जलस्तर बढ़ते देखो।
जमा करो बारिश का पानी,
योजनाबद्ध व्यवस्था करो।

पेड बच्चाओ, पौधे लगाओ,
नदी-झरनों को बर्बाद न करो।
पर्यावरण सुरक्षित रखो,
और भविष्य सुनिश्चित करो।



- मिराया मोहंती
कक्षा 8 'D' विभाग

फ़िल्म समीक्षा : सितारे ज़मीन पर

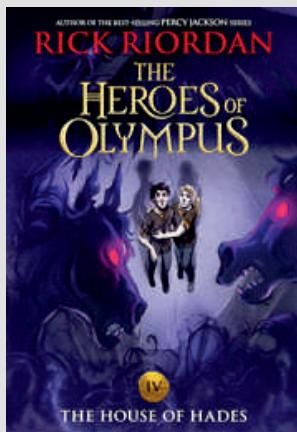


सफलता हासिल की जा सकती है। फ़िल्म यह संदेश देती है कि हर व्यक्ति में कोई-न-कोई प्रतिभा होती है, बस उसे सही दिशा और मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। कलाकारों का अभिनय प्रभावशाली है और गीत-संगीत भी दिल को छू जाते हैं। कथा और अभिनय दोनों ही बहुत कमाल के हैं। ★ ★ ★ ½ – एक प्रेरणादायी और उत्कृष्ट फ़िल्म!!

- नियति वी एस
कक्षा 8'C' विभाग



पुस्तक समीक्षा: हीरोज ऑफ़ ओलम्पस



भूमिका: हर किसी के जीवन में ऐसी कहानियाँ होती हैं, जो केवल मनोरंजन नहीं देती, बल्कि साहस, मित्रता और आत्मविश्वास का महत्व भी सिखाती हैं। रिक रिओर्डन द्वारा लिखी गई हीरोज ऑफ़ ओलम्पस पुस्तक-शृंखला इसी का उदाहरण है। इसमें ग्रीक और रोमन पौराणिक कथाओं को आधुनिक समय की पृष्ठभूमि में प्रस्तुत किया गया है।

कहानी का सार : इस शृंखला की कथा एक भविष्यवाणी पर आधारित है, जिसमें सात अर्ध-देवताओं को पृथ्वी की प्राचीन शक्तियों और देवी गेया से दुनिया को बचाना होता है। इन सात नायकों में पर्सी जैकसन, एनाबेथ, जैसन, पाइपर, लियो, हेज़ल और फ्रैंक शामिल हैं। हर पात्र के अपने गुण और संघर्ष हैं। पर्सी का साहस, एनाबेथ की बुद्धिमत्ता, जैसन का नेतृत्व, पाइपर की निष्ठा, लियो की रचनात्मकता, हेज़ल का रहस्यमय अतीत और फ्रैंक की अनोखी क्षमताएँ इस कहानी को गहराई प्रदान करती हैं।

लेखन शैली : रिक रिओर्डन की भाषा सरल, हास्यर्पूण और पाठकों को बाँधने वाली है। वे संवाद और परिस्थितियों को इस तरह प्रस्तुत करते हैं कि पाठक को लगता है जैसे वह स्वयं कहानी का हिस्सा हो।

मेरी राय : मेरे विचार में हीरोज ऑफ़ ओलम्पस केवल कल्पना पर आधारित कथा नहीं है, बल्कि यह जीवन की कई गहरी सच्चाइयों को भी उजागर करती है। यह सिखाती है कि कठिनाइयों का सामना करने और किसी भी लक्ष्य को पाने के लिए सहयोग और मित्रता आवश्यक है।

मेरी रेटिंग : ★ ★ ★ ★ ½ (४.५ सितारे)

- जोक्रिम योहान जेस्सो

कक्षा 8'A' विभाग



मेरी सिंक्रिम यात्रा

पिछले साल में सिंक्रिम गई थी और यह बाकई एक यादगार यात्रा थी। हम दिसंबर के महीने में वहाँ गए थे और मौसम बहुत ठंडा था। मेरे पिताजी, माँ और बहन को यह अनुभव बहुत अच्छा लगा। हम वहाँ एक होटल में ठहरे थे। वहाँ की सेवा हमें बहुत पसंद आई। हम लगभग 10 दिन तक वहाँ रहे और मैंने वहाँ के लोगों और उनकी जीवनशैली को करीब से देखा। सिंक्रिम की विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं की झलक देखने का अवसर मिला। हमने वहाँ की प्रसिद्ध जगहों का भ्रमण किया, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आनंद लिया और स्थानीय व्यंजनों का स्वाद चखा। परिवार के साथ धूमने के लिए यह एक बहुत ही सुंदर स्थान है। यह यात्रा मेरे जीवन का अत्यंत सुखद और अविस्मरणीय अनुभव रही।



- श्रीषा के मेनन

कक्षा 8'A' विभाग



खेल जगत का सितारा: विराट कोहली



विराट कोहली भारत के महान क्रिकेट खिलाड़ियों में से एक हैं। उन्हें उनकी आक्रामक बल्लेबाजी और फिटनेस के लिए जाना जाता है। वे भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान हैं और अपनी मेहनत से युवाओं के लिए प्रेरणा बने हैं। कोहली ने कम उम्र से ही क्रिकेट खेलना शुरू किया और जल्द ही अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई। उन्होंने कई रिकॉर्ड तोड़े हैं और भारत को कई बार जीत दिलाई है। उनका अनुशासन, आत्मविश्वास और देश के प्रति समर्पण उन्हें सबसे खास बनाता है। विराट कोहली केवल एक खिलाड़ी नहीं हैं, वर्तमान करोड़ों लोगों के आदर्श हैं।

- आयुषी प्रमोद

कक्षा 8 'D' विभाग



मेरा मुंबई ट्रिप

जब मैं बारह साल की थी तब मैंने पहली बार लॉकडाउन के बाद मुंबई की यात्रा की। बहुत-सी दुकानें बंद हो गई थीं, और कुछ दुकानें फिर से खुल चुकी थीं। कोरोना के कारण बहुत-सी जगहें भी बंद पड़ी थीं। मेरी मनपसंद जगह – गेटवे ऑफ इंडिया, दुकानें और खाना – सब उपलब्ध नहीं थे। छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस के सामने भीड़ नहीं थी। फिर भी सब देखकर बहुत खुशी हुई। समुद्र के टट पर असामान्य भीड़ थी। सभी लोग मास्क पहने हुए थे। लेकिन यह सब होने के बावजूद मेरे परिवार ने बहुत आनंद लिया। इस यात्रा से यह सीख मिली कि चाहे कितना भी दुःख और अशांति क्यों न हो, हमें हमेशा अच्छे को ढूँढ़ना चाहिए।

- श्री कीर्तना मान्डरेटी

कक्षा 8 'B' विभाग



गोवा यात्रा



मैं 9 अक्टूबर 2023 को अपने परिवार के साथ गोवा गया। सुबह 8:00 बजे हम हवाई अड्डे पहुँचे और 11:00 बजे विमान में सवार हुए। 12:00 बजे हम दुबोलिम हवाई अड्डे पर उतरे और वहाँ से हमारा रिसॉर्ट लगभग 1 घंटे की दूरी पर था। दोपहर 2:00 बजे रिसॉर्ट पहुँचकर हमने थोड़ा आराम किया। शाम 5:00 बजे हम बीच पर घूमने गए और शाम को कपड़े बदलकर फल खाए। रात 9:00 बजे भोजन कर सो गए। अगले दिन, 10 अक्टूबर को, हम

जल्दी उठकर नाश्ता किए और पहले कोलवा बीच, फिर बागा बीच गए। शाम 4:00 बजे रिसॉर्ट लौटकर आराम किया। 11 से 13 अक्टूबर के दौरान हमने गोवा में घूम-फिरकर नए-नए व्यंजन चखे और खूब आनंद लिया। 14 अक्टूबर को हम फिर से घर लौट आए। यह यात्रा हमारे लिए बहुत ही सुखद और यादगार अनुभव रही।

- सीधा वी

कक्षा 8 'B' विभाग



फ़िल्म “83” समीक्षा



फ़िल्म 83 भारत की 1983 क्रिकेट वर्ल्ड कप जीत की कहानी बयान करती है। इसमें रणवीर सिंह ने कपिल देव का किरदार बहुत अच्छे से निभाया है। फ़िल्म में दिखाया गया है कि भारतीय टीम ने किस तरह मेहनत, हिम्मत और संघर्ष से रोमांचक मुकाबलों को जीतकर दुनिया को चौंकाया। इसकी कहानी प्रेरणादायक है और दर्शकों को बाँधकर रखने वाली है। यह फ़िल्म केवल क्रिकेट प्रेमियों के लिए नहीं, बल्कि हर भारतीय के लिए गर्व और प्रेरणा का स्रोत है।

समग्र समीक्षा

IMDB पर इस फ़िल्म को लगभग 7.5/10 की रेटिंग मिली है। यह फ़िल्म उपयोगी और प्रेरणादायक है। भारतीय सिनेमा की रेटिंग → फ़िल्मफेयर

आलोचकों की रेटिंग: 4.5/5

दर्शकों की रेटिंग: 3.3/5

→ टाइम्स ऑफ़ इंडिया (TOI)

आलोचकों की रेटिंग: 4.0/5



- लोहित एस
कक्षा 8 'D' विभाग

फूलों की मुस्कान

बागिया में जब फूल खिलते हैं,
रंग-रूप सारे महकते हैं।

तितलियाँ आकर उनके
साथ कोमल पंख फैलाती हैं।

भौंरे गुनगुनते मधुर गीत,
मीठे सुर सबको भाते हैं।

कलियाँ धीरे-धीरे खिलकर
नया आसमान जगाती हैं।

बारिश की नर्म-नर्म बूँदें
खुशियों के रंग धोलती हैं।

धूप की सुनहरी किरणें हर
कोने में उजाला भरती हैं।

कुछ फूल शर्मिले मुस्कराते,
कुछ खुलकर सबको मिलते हैं।

हर रंग में दोस्ती की बात,
खिलने से दीप जलाते हैं।

फूलों की मीठी-सी बोली
मन के तार नरम छूते हैं।

हम भी फूलों से सीख लें
नरम दिल से सबको प्यार देते हैं।



- आकांक्षा भारती
कक्षा 8 'C' विभाग

हिमांतरंग : STREAM FEST 2025 का अनोखा संगम

“भाव एक, भाषा अनेक — ग्लेशियर बचाएँ, जीवन बचाएँ”

दिनांक 30 अगस्त 2025 को हमारे विद्यालय में वार्षिक STREAM FEST अत्यंत उत्साह और गरिमा के साथ मनाया गया। इस वर्ष का विषय था - “ग्लेशियर का संरक्षण”। हिंदी, कन्नड़ और अंग्रेज़ी विभागों ने संयुक्त रूप से “हिमांतरंग” शीर्षक से प्रभावशाली प्रस्तुति दी। विशेष उल्लेखनीय तथ्य यह रहा कि संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन एवं निरूपण हिंदी विभाग द्वारा किया गया, जिसने दर्शकों को आरंभ से अंत तक बाँधे रखा। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि विद्यार्थियों और समाज में ग्लेशियर संरक्षण के महत्व पर जागरूकता फैलाना था। साथ ही इस प्रस्तुति ने यह भी दर्शया कि “भाव एक, भाषा अनेक” यानी अलग-अलग भाषाओं - हिंदी, कन्नड़ और अंग्रेज़ी - के माध्यम से एक ही संदेश प्रस्तुत किया गया - “ग्लेशियर बचाएँ, जीवन बचाएँ”। हिंदी विभाग ने कक्षा-दृश्य प्रस्तुत किया, जिसमें शिक्षक-छात्र संवाद के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया कि ग्लेशियर केवल बर्फ के ढेर नहीं, बल्कि जीवनदायिनी नदियों का मूल स्रोत हैं। इसके बाद कन्नड़ विभाग ने भावपूर्ण नृत्य-नाटिका द्वारा धरती माँ और उसकी बेटी “ग्लेशियर” के रिश्ते को जीवंत किया। अंग्रेज़ी विभाग ने नुक़़़द नाटक प्रस्तुत कर यह दिखाया कि यदि ग्लेशियर पिघलते रहे तो भविष्य में जल-संकट, बाढ़ और सूखे जैसी गंभीर परिस्थितियाँ सामने आँ़गी। बीच-बीच में विद्यार्थियों ने गीत और सामूहिक उद्घोष से यह संदेश फैलाया - “अब नहीं तो कभी नहीं, अगर बर्फ़ पिघली तो जीवन भी पिघल जाएगा।” कार्यक्रम का समापन आभार और प्रेरक संदेश के साथ हुआ। प्रधानाचार्य महोदय ने विद्यार्थियों के प्रयासों की सराहना की और कहा कि इस प्रकार के सांस्कृतिक-शैक्षणिक आयोजन विद्यार्थियों को संवेदनशील, जागरूक और जिम्मेदार नागरिक बनाने में सहायक होते हैं।

निश्चित ही STREAM FEST - “हिमांतरंग” ने यह संदेश सभी तक पहुँचाया कि - “ग्लेशियर का संरक्षण ही जीवन का संरक्षण है।”

- कालिंगराजु
हिंदी शिक्षक



मेरी कक्षा के अनुभव



विद्यालय में पढ़ना मेरे लिए सबसे सुंदर और यादगार समय है। मेरी कक्षा के अनुभव मेरे लिए बहुत खास हैं। मेरी कक्षा का वातावरण हमेशा दोस्ती और खुशी भरा होता है। जब हम मिलकर पढ़ाई करते या समूह में कार्य करते हैं, तब सबको बहुत उत्साह आता और हमारी अध्यापिका हमें प्रोत्साहित करतीं। विद्यालय में जब कोई उत्सव (Assembly, Annual Day) मनाया जाता, तब हमें बहुत मज़ा आता।

हमने कक्षा में नाटक प्रस्तुति किया। उस प्रस्तुति में गलतियाँ हुईं, पर हमने एक-दूसरे की मदद भी की। खेलकूद की प्रतियोगिता हमारी कक्षा के लिए एक विशेष अनुभव रही। हमारी टीम सिल्वर और गोल्ड पदक कई बार जीत चुकी है। उस समय हमें एकता और सहयोग की ताकत का पता चलता है।

- क्रिया आर

कक्षा 8 'C' विभाग



शब्दों का सफर

सपनों की उड़ान

हम सब लेंगे सपनों की उड़ान,
यह सफर नहीं है आसान।
इसे पाकर हम छुएँगे आसमान,
और सबको सुनाएँगे अपनी दास्तान।
हम सब करेंगे सारी कठिनाई पार,
कोई न रोके - न ताकत, न दीवार।
ज़िम्मेदारी होगी हमारे कंधों पर सवार,
फिर भी बढ़ेंगे आगे, न होंगे लाचार।
सपनों की उड़ान से होती है शुरुआत,
इन्हीं से मिलती है सफलताओं की बरसात।
नए सफर की होगी तैयारी,
चाहे कितनी भी हो कठिनाई भारी।
हमारा होता रहेगा आना-जाना,
फिर भी गाते रहेंगे यह तराना।
खुशियाँ भी होंगी, दुख भी आएँगे,
पर सपनों को हम कभी न भुलाएँगे।
हम उड़ेंगे, गिरेंगे और फिर उठेंगे,
पूरी दुनिया को अपनी ताकत दिखाएँगे।
अगर कुछ ठान लिया, तो कर दिखाएँगे,
सपनों की उड़ान भरकर जीवन जी पाएँगे।



- हृदान कोठारी

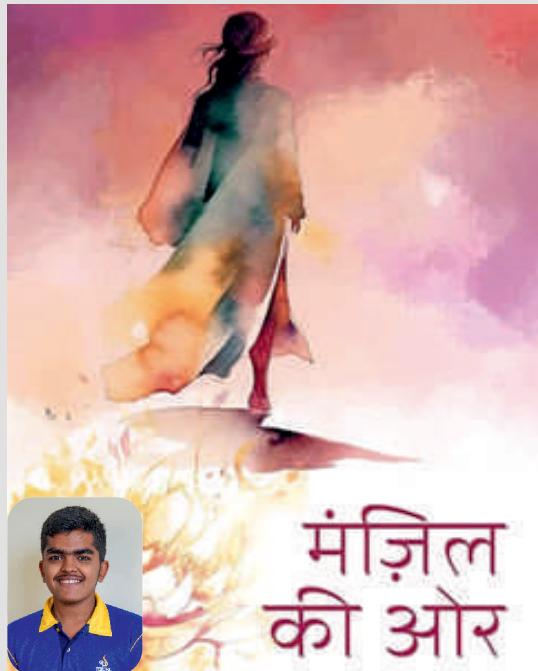
कक्षा 9 'D' विभाग

मंजिलों की ओर

सपने जीवन का सच्चा आधार,
बिन सपनों के लगता बेकार।
सपनों से मिलता है विश्वास,
जीवन में भरता उत्साह।
मेहनत से ही पूरे होते,
संघर्ष की राह पर चलते।
धैर्य, साहस और लगन से,
मनुष्य पहुँचता गगन से।
हर इंसान सपने सजाए,
उनके पीछे कदम बढ़ाए।
सपने देते शक्ति अपार,
करते जीवन को उज्ज्वल और सार।
सपनों से मिलता है संबल,
बनता जीवन का सुंदर संकल्प।
जो सपनों पर विश्वास जताता,
वही सफलता को पास बुलाता।
सपनों को मत जाने दो मिट्टने,
कदम बढ़ाओ, न हारो बैठने।
सपनों में ही छिपा है सम्मान,
सपनों से ही होती है पहचान।

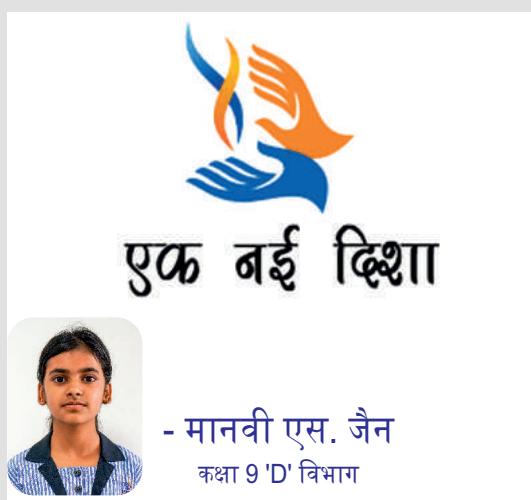
नई दिशा, नई उड़ान

सपने हैं जीवन की पहचान,
देते हैं जीते को नई जान।
अँधियारे में जगमग ज्योति,
भरते दिल में आशा की ज्योति।
सपनों से मिलती राह नई,
मन में जगती चाह नई।
परिश्रम से ही पूरे होते,
हौसलों से मंजिल संजोते।
कठिनाइयों से डरना नहीं,
रुकावटों से भरमना नहीं।
सपनों को साकार बनाओ,
मेहनत से जग में चमकाओ।
बिन सपनों के जीवन अधूरा,
उनसे ही होता जगत मंजूरा।
सपनों की उड़ान है सबसे महान,
देती जीवन को सुंदर विधान।



- आर्यव डर्ला

कक्षा 9 'D' विभाग



भारत माँ की महिमा

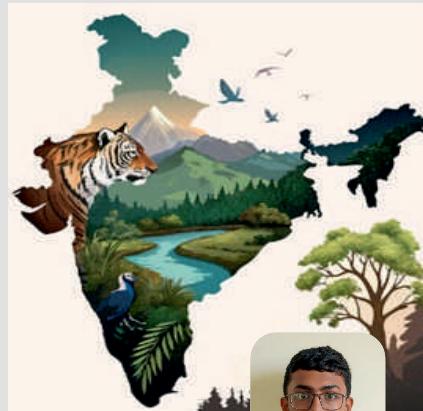
भारत देश महान है,
सभी देशों में इसकी शान है।
भारत माता का ताज हिमालय है,
जिससे ऊँचा कोई पर्वत नहीं है।

गंगा, यमुना, सरस्वती, नर्मदा की धारा,
सब मिलकर करती हैं भारत का गुणगान सारा।
भारत की मिट्टी सोने से कीमती है,
हर कण में इसकी खुशबू बसती है।

यहाँ की संस्कृति सबसे न्यारी है,
सतरंगी धरोहर इसकी पहचान हमारी है।
अनेकता में एकता इसकी सबसे बड़ी शान,
हर भाषा, हर धर्म को देता है सम्मान।

शेरों की गर्जना यहाँ के जंगलों में गँजती है,
सूरज की किरणें खेतों में चमकती हैं।
भारत की धरती वीरों की जन्मभूमि है,
बलिदानी सपूतों की कर्मभूमि है।

आज भी इसकी माटी गाती है गान,
मेरा भारत सदा रहे महान।



- शशांक बी. एन
कक्षा 10 'D' विभाग

भारत को महान बनाने का संकल्प

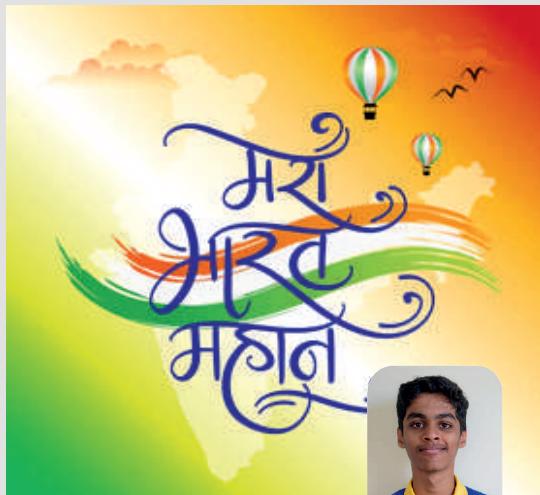
हम सबने यह ठाना है,
भारत को महान बनाना है।
ज्ञान-विज्ञान में आगे बढ़ेंगे,
नए कीर्तिमान हम गढ़ेंगे।

मेहनत से पीछे न हटेंगे,
सपनों को सच कर दिखाएँगे।
भ्रष्टाचार को दूर भगाएँगे,
सञ्चार का दीप जलाएँगे।

एकता का संदेश फैलाएँगे,
भाईचारे से जगमगाएँगे।
शिक्षा से सबको सजाएँगे,
अज्ञान को दूर हटाएँगे।

नारी-पुरुष को देंगे समान,
यही है भारत की पहचान।
देशभक्ति से दिल भर जाएगा,
भारत माँ का मान बढ़ जाएगा।

हम सबने यह ठाना है,
भारत को महान बनाना है।



- चिरंत एस
कक्षा 10 'D' विभाग

भविष्य का भारत

एक रात की मेहनत
नहीं बनाती भविष्य का भारत।
क्या है भविष्य का भारत?
हर एक का सपना, हर एक की मेहनत,
जिससे बनता है सशक्त भारत।

एक रात की मेहनत
नहीं गढ़ती भारत का मान।
भविष्य का भारत वही है,
जहाँ लोगों को मिले सम्मान।

ऐसा भारत नहीं बनता एक रात में,
हर दिन, हर क्षण मेहनत करने से बनता है भविष्य का भारत।
क्या है भविष्य का भारत?
जहाँ पशुओं की रक्षा हो,
पेड़ों का ध्यान रखा जाए,
वही है भविष्य का भारत।

मेरे लिए भविष्य का भारत वही है -
जहाँ स्त्री को सम्मान मिले,
हर व्यक्ति की काविलियत पहचानी जाए।
जहाँ हर बच्चे को शिक्षा का अधिकार हो,
वही है सद्गुरु भविष्य का भारत।

दिन-प्रतिदिन एक होकर बढ़ें,
तब जागेगा हम सबका भविष्य का भारत।



- मानव वी
कक्षा 10 'D' विभाग

सावन सुंदर

पेड़ों-पेड़ों बारिश छाई,
ठंडी-ठंडी लाज लजाई।
बरस-बरस कर लाए खुशी,
आओ खेलें, भीगें भाई।
ये ऋतु ही मेरी गवाही।

चलो- चलो मैं रस्सी थामूँ,
तुम सबको उद्धालाएँ खूब
घिर-घिर आई काली घटाएँ
बरखा में, मैं गुन-गुनकर गाँँ।

क्या सुंदर दृश्य ये,
मन को भी भा जाए।
बादल छाए घर-घर,
सुख-शांति बरसाए॥



- निलय घोष
कक्षा 10 'F' विभाग

जीवन के चार मौसम

वसंत में खिलते हम, नए और प्यारे,
दुनिया रंगीन, आकाश भी न्यारे।
हँसी, खेल और मन में उजियारा,
हर दिन अद्भुत, जैसे सुनहरा सितारा।
फिर आता ग्रीष्म, गर्म और जोशीला,
सपनों का पीछा, दिल रहता खिलखिला।
सूरज ऊँचा, महत्वाकांक्षाएँ बढ़तीं,
आसमान तले भावनाएँ झूमतीं।
पतझड़ में रंग, पर पत्ता झरता,
कड़ी मेहनत में अनुभव भरता।
पते झरें, पर ज्ञान बढ़े,
नरम हवा में जीवन की सीख मिले।
शीत आती धीरे और शांत,
आराम का समय, यादें बनें अनंत।
ठंड सही, पर दिल गरम रहे,
जीवन का अंतिम आलिंगन सुकून भरे।



- सृष्टि सिंह
कक्षा 9 'E' विभाग

हिंदी हमारी शान है

हिंदी से है भारत प्यारा,
हिंदी ने सबको संग सँवारा।
विश्व में गूँजे इसका मान,
हिंदी है भारत की पहचान।
आओ मिलकर वचन हम दें,
हिंदी का गौरव सदा बढ़ाएँ।
हिंदी है अपनी पहचान,
मिट्टी की खुशबू, देश की जान।
सरल, मीठी, मधुर ये भाषा,
हर दिल को करती है प्यासा।
हम सबका यह कर्तव्य बने,
हिंदी का सम्मान बढ़े।
जहाँ-जहाँ भी जाएँ हम,
हिंदी से जगमगाएँ हम।

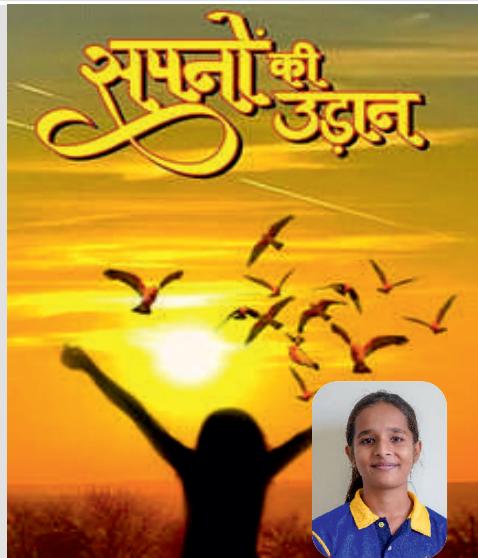


- दीक्षा गुगरी
कक्षा 9 'E' विभाग

सपनों की उड़ान

मैं चली हूँ सपनों की उड़ान,
पंख खोलूँगी, छू लूँगी आसमान।
जन्मभूमि से उठे यह महान,
मेरे सपनों का है सम्मान।

रात भर जागकर मैंने लिखी कथा,
सबको खुश करूँ, करूँ उमंग-व्यथा।
सपने मेरे बसते हैं नयन में,
खुली फिज़ा, धरती और गगन में।
बड़े ही महान हैं सपने मेरे,
सहयोग है कम, पर मनोबल धेरे।
समाज कहे-पंख फैलाकर बढ़ लो,
ले चलो सपनों का विमान सँभालो।
जग लोगों को क्या परवाह यहाँ,
यह मिट्टी रहेगी सदा गवाह।
मैं चली हूँ अपने अरमान लिए,
सपनों की उड़ान लिए।



- दिशा अर्जुन
कक्षा 9 'C' विभाग

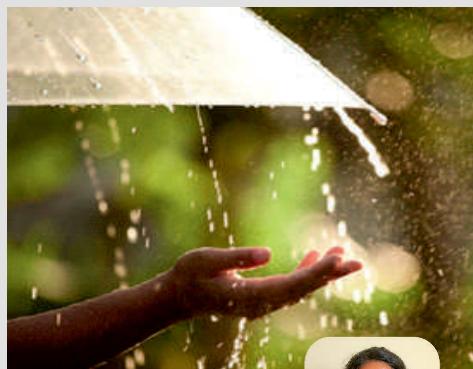
वर्षा कृतु

वर्षा कृतु की बारिशों के बीच,
खिल उठती है आशा की एक छोटी-सी बीज।
किसानों के दिल में छा जाती है खुशी,
खुला गगन देता है जीवन की रोशनी।
वर्षा कृतु की बारिशों के बीच,
पानी की बूँदें गिरें जैसे चमकते मोती नीच।
कभी कोई महसूस करे उदासी का भाव,
तो कभी जागे मन में नया चाव।

वर्षा कृतु की बारिशों के बीच,
एक सुंदर नज़ारा करता मुझे खींच।
कीचड़ में मोर करे आनंदमय नृत्य,
जो दर्शाता है उसके हृदय का सत्य।

वर्षा कृतु की बारिशों के बीच,
छोटे बच्चे का मन हो जाता भयभीत।
विजली की गर्जन उसे डराए,
पर माँ की आवाज़ स्नेह दिलाए।

वर्षा कृतु की बारिशों के बीच,
पानी बहाता मधुर-सी तान।
मौसम का रूप बदलता सदा,
कल क्या होगा—किसे है पता।



- नेहा सुवीश
कक्षा 10 'E' विभाग

सच्चा मित्र



दो दोस्त रेगिस्तान में ठहल रहे थे। चलते-चलते दोनों में बहस हो गई। एक दोस्त ने गुस्से में आकर दूसरे दोस्त को थप्पड़ मार दिया। जिस दोस्त को थप्पड़ मारा गया, उसे बहुत बुरा लगा, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। उसने रेत पर लिखा – “आज मेरे सबसे अच्छे दोस्त ने मुझे थप्पड़ मारा।” बाद में दोनों ने नखलिस्तान पहुँचकर स्नान करने का

निश्चय किया। जिस दोस्त को थप्पड़ मारा गया था, वह रेगिस्तान में धैंस गया और फूबने लगा। उसके मित्र ने तुरंत उसे बचाने के लिए हाथ बढ़ाया और बाहर निकाल लिया। जब वह मित्र सुरक्षित हो गया, तो उसने पत्थर पर लिखा – “आज मेरे सबसे अच्छे मित्र ने मेरी जान बचाई।” यह देखकर उसके साथी ने आश्रय से पूछा – “पहले जब मैंने तुम्हें थप्पड़ मारा, तब तुमने रेत पर लिखा और अब जब मैंने तुम्हारी जान बचाई, तब पत्थर पर क्यों लिखा?” मित्र ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया – “अच्छे कर्मों को पत्थर पर लिखना चाहिए ताकि उन्हें कभी भुलाया न जा सके, और बुरे कर्मों को रेत पर लिखना चाहिए ताकि हवा उन्हें मिटा दे।”

शिक्षा:- सच्ची मित्रता वही है जिसमें मित्र की गलतियों को भूलकर मिटा देना चाहिए और उसकी अच्छाइयों को जीवनभर याद रखना चाहिए।

- सुहाना जी

कक्षा 9 'F' विभाग



फ़िल्म समीक्षा – स्वातंत्र्यवीर सावरकर : संघर्ष और प्रेरणा की कहानी अभिनय से दिल छूने वाले पल

फ़िल्म में रणदीप हुड़ा का ट्रांसफ़ॉर्मेशन देखने लायक है। जब वे जेल में होते हैं, तो उनके चेहरे का दर्द, आँखों की उदासी और शरीर की हालत देखकर दर्शक भी दुख महसूस करते हैं। अंकिता लोखंडे ने सावरकर की पत्नी के किरदार में गहरी भावनाएँ जगाई, जिससे उनके दुख और ज़ज़बात वास्तविक लगती है।

कहानी में जो प्रभावित करता है : फ़िल्म की सबसे असरदार बात यह है कि सावरकर सिर्फ़ लड़ाई नहीं लड़ते, बल्कि सोचते भी हैं। वे देश के लिए तकलीफ़ उठाते हैं और जेल में भी हार नहीं मानते। उनके विचार और उनका जोश प्रेरणादायी है।



कुछ कमियाँ : फ़िल्म थोड़ी लंबी लगती है, खासकर जेल वाले हिस्सों में कहानी धीमी हो जाती है। कई बार लगता है कि इसे और संक्षिप्त किया जा सकता था। साथ ही, फ़िल्म ज़्यादातर सावरकर की सोच पर केंद्रित है—अगर उनकी पारिवारिक ज़िंदगी और व्यक्तिगत भावनाओं को भी थोड़ी जगह मिलती तो और प्रभावशाली बनती।

मेरा अनुभव : फ़िल्म देखकर लगा कि सावरकर जी ने सचमुच बहुत कुछ सहा है। कुछ हिस्से थोड़े उबाऊ लगे, लेकिन रणदीप हुड़ा की दमदार एक्टिंग बार-बार ध्यान खींच लेती है। अगर बायोपिक पसंद है, तो यह फ़िल्म ज़रूर देखनी चाहिए—यह हमें पढ़ाई वाले इतिहास से अलग, असली संघर्ष की झलक देती है।



- सात्रिक एच एम

कक्षा 9 'F' विभाग

आत्मविश्वास

ये आसमाँ छिन गया तो क्या?

नया गगन हँड़ लेंगे।

हम वो परिदै नहीं,

जो उड़ना छोड़ देंगे!!

मत पूछो हौंसले हमारे,

आज कितने विश्वस्त हैं।

एक नई शुरुआत,

नया आरम्भ तय है...

माना अभी हम निःशब्द हैं,

ये मुकाम नहीं हासिल तो क्या?

नए ठिकाने हँड़ लेंगे।

हम वो यायावर नहीं,

जो अपनी तलाश छोड़ देंगे।

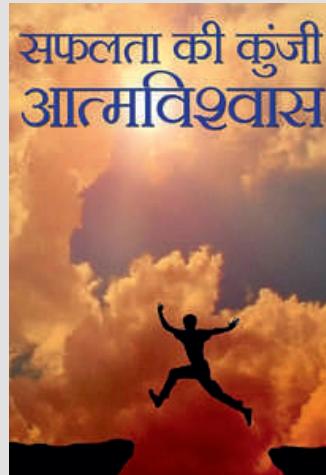
हम वो परिदै नहीं,

जो उड़ना छोड़ देंगे!!



- श्रेता राजपुरोहित
हिंदी शिक्षिका

सफलता की कुंजी आत्मविश्वास



संपादक की कलम से – साहित्य की छाया में

साहित्य वह जो कल्पना को छू जाए,
अदृश्य भावनाओं को आकार दे जाए,
हर शब्द में इतिहास की धड़कन समेट जाए,
और अधूरी कहानियों को पूर्णता दे जाए।

साहित्य वह जो चुप्पियों को पढ़ ले,
खामोश लम्हों को जीवन दे जाए,
हर पन्ने में नए सपनों की रोशनी बिखेर दे,
और समय की दीवारों को पार कर जाए।

साहित्य वह जो आँसुओं में रंग भर दे,
साधारण को असाधारण बना दे,
हर कविता, हर कथा, हर उपन्यास में,
मानव की आत्मा की गहराई दिखा दे।

साहित्य वह जो हवा की सरसराहट में गंजे,
चाँदनी रात में कानों को छू जाए,
पूराने शहरों की गलियों में खो जाए,
और हर दिल में एक नई कहानी छोड़ जाए।

जब तक कलम लिखती रहेगी,
जब तक पन्नों में जीते की आग बहेगी,
तब तक साहित्य से बंधा रहेगा,
यह कहानी, यह कल्पना, यह ब्रह्मांड सारा।

और जब शब्दों का संसार थम जाए,
जब पन्नों की खुशबू हवा में घुल जाए,
तब भी साहित्य की छाया हमारे भीतर जीवित रहेगी,
हर धड़कन में, हर खामोशी में, हर सपने में।



- कालिंगराज
हिंदी शिक्षक